कवचुआह रोपुठे वरिासत स्थल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में वैज्ञानिकों द्वारा जलवायु परविर्तन और मौसम की वषिम परस्थितिओं को देखते हुए वशि्व में पानी के लयि बढ़ते संघर्षों को कम करने हेतु मज़िोरम की एक खोई हुई सभ्यता को अपनाने की बात कही गई है जो चट्टानों को छपि हुए जलाशयों में बदल कर वषिम स्थतियिों में जल संरक्षण में महत्त्वपूर्ण हो सकती है।

प्रमुख बदिु

- वर्ष 2016 में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India-ASI) द्वारा म्याँमार की सीमा से सटे मज़िोरम के चम्फाई (Champhai) ज़लि के एक गांव वांगछयिा (Vangchhia) में एक 'लविगि हस्टि्री मयूज़यिम (Living History Museum)' की खोज की गई। जसि कवचुआह रोपुठे वरिासत स्थल (Kawtchhuah Ropuithe Heritage Site) नाम दयिा गया।
- कवचुआह रोपुठे वरिासत स्थल भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के संरक्षति स्मारकों के अंतर्गत मज़िोरम की पहली साइट है। जो यहाँ के स्थानीय लोगों द्वारा कई पीढ़ियों से पूजनीय है।
- आइज़ॉल से 260 कमिी. की दूरी पर स्थति यह साइट लगभग 45 वर्ग कमिी. क्षेत्रफल में वस्तिृत है, जसिमें बड़े पत्थर के स्लैब, मेनहरि (Menhirs - बड़े और खड़े पत्थर) और एक नेक्रोपोलसि (Necropolis - एक बड़ा कब्रस्तिान) तथा कलाकृतयिों के बीच में चत्रिति चत्रिलेख मलि हैं।
- यह क्षेत्र नचिले हमिालय का हस्सिा है और इसमें हल्के भूरे व काले रंग के वभिन्नि प्रकार के बलुआ पत्थरों की पहाड़यिों की कतारें हैं।

जल संग्रहण की संभावति कला

- ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन समय में वांगछयिा के लोगों ने अपनी बस्ती के लयि इन चट्टानों पर नक्काशी की थी। मुख्य खुदाई वाली जगह पर ऐसे 15 इलाके प्राप्त हुए हैं।

//

- पुरातत्त्ववदिों द्वारा की गई सबसे महत्त्वपूर्ण खोजों में यहाँ पाए गए पत्थरों के बीच पानी के पैवेलयिन (पत्थरों को काट कर बनाए गए एक फीट से लेकर एक मीटर तक के छेद) हैं, जो कई बलुआ पत्थर की ढलानों पर फैले हुए हैं।
- ASI के शोधकर्त्ताओं ने बताया कि ग्रे सैंडस्टोन (Grey Sandstone) छिद्रों के लिये उपयुक्त होती है, जबकि कठोर काली चट्टान (Black Rock) का उपयोग मेन्हिरों के लिये किया जाता है।
- शोधकर्त्ताओं द्वारा विगत वर्षों में वांगछिया साइट पर किये गए अध्ययन के अनुसार, यह क्रियाविधि कई शताब्दियों पहले सिद्ध की गई जल संचयन हेतु साधारण विज्ञान प्रतीत हो रही है जिसे स्थानीय आबादी कम-से-कम एक वर्ष तक इस्तेमाल कर सकती है।
- सबसे उल्लेखनीय विषय यह है कि कैसे उन लोगों द्वारा बारिश के पानी को ढलान से बहते हुए यहाँ चट्टानों में रोक दिया गया है, ताकि चट्टानों के अंदर पानी जमा हो सके।
- अभी तक पुरातत्त्ववदि वांगछिया बस्ती के बारे में सही-सही पता नहीं लगा पाए हैं क्योंकि तीन साल पहले जब इस जगह की खुदाई की गई तो यहाँ मिले खंडहरों को 15वीं शताब्दी के होने का अनुमान लगाया गया। बाद में बीरबल साहनी संस्थान ने इसे 6वीं शताब्दी का बताया।

निष्कर्ष

- अभी हाल ही में ASI की टीम द्वारा पहले के अनुत्तरित प्रश्नों के जवाब के तलाश में वांगछिया के पास नवपाषाण गुफाओं की खोज की गई जो यह दर्शाती है कि यह खोई हुई सभ्यता और भी अधिक पुरानी हो सकती है।
- मिज़ोरम चैप्टर ऑफ इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज (Mizoram Chapter of Indian National Trust for Art and Cultural Heritage (INTACH) के संयोजक ने बताया कि ये पुरातात्विक अवशेष वांगछिया या चम्फाई ज़िले तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि कम-से-कम चार और प्रमुख साइटें हैं - फ़ार्कन, डुंग्ट्लंग, लयिनपुई और लुनघुनियान। जहाँ अब तक सैकड़ों मेनहिर और चित्रलेखों के साथ बड़े पैमाने पर खुदाई की जा रही है जो कि एक भुला दिए गए अतीत की कहानियों को बताते हैं।

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
(Archaeological Survey of India-ASI)

- संस्कृति मंत्रालय के अधीन यह राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासतों के पुरातत्त्वीय अनुसंधान तथा संरक्षण के लिये एक प्रमुख संगठन है।
- इसका मुख्य कार्य राष्ट्रीय महत्त्व के प्राचीन स्मारकों तथा स्थलों और भग्नावशेषों का रख-रखाव करना है।
- प्राचीन स्मारक और पुरातात्त्विक अधिनियम,1958 के प्रावधान ASI का मार्गदर्शन करते हैं।
- पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972 द्वारा ASI अपने कामकाज को दिशा देता है।
- ASI राष्ट्रीय महत्त्व के प्रमुख पुरातात्त्विक स्थलों की बेहतर देखभाल के लिये संपूर्ण देश को 24 मंडलों में बाँटता है।

स्रोत – द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ancient-art-of-holding-water-in-rocks